दिनांक–13.02.2025

UG Third Semester MJC (Philosophy)

योग दर्शन में ईश्वर

लघु उत्तरीय

योग दर्शन में ईश्वर की उपासना का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह साधक को आत्म–साक्षात्कार और मोक्ष की दिशा में अग्रसर करती है। ईश्वर की उपासना के माध्यम से साधक अपने मन को शुद्ध और स्थिर करता है और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करता है।

ईश्वर की उपासना निम्नलिखित तरीकों से की जाती है–

1. **ईश्वर प्रणिधान :** यह ईश्वर के प्रति समर्पण और भक्ति का भाव है। साधक अपने समस्त कर्मों और फलों को ईश्वर के प्रति समर्पित करता है और उसके मार्गदर्शन में चलता है।
2. **जप और ध्यान :** ईश्वर का ध्यान और जप करने से साधक का मन शुद्ध और स्थिर होता है। 'ओम्' मंत्र का जप और ध्यान करने से साधक को मानसिक शांति और आत्मिक बल मिलता है।
3. **भक्ति योग :** ईश्वर की भक्ति करना और उसके प्रति प्रेम और श्रद्धा का भाव रखना। भक्ति योग के माध्यम से साधक अपने अहंकार को त्यागता है और ईश्वर के साथ एकत्व का अनुभव करता है।
4. **प्रणाम और पूजा :** ईश्वर की प्रतिमा या प्रतीक के सामने प्रणाम और पूजा करना। इससे साधक के मन में विनम्रता और श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है।

योग दर्शन में ईश्वर की उपासना का मुख्य उद्देश्य साधक का आत्म–साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति की दिशा में मार्गदर्शन करना है। इसके माध्यम से साधक अपने जीवन में शांति, स्थिरता और आत्मिक संतुलन प्राप्त करता है।

सांख्य का सत्कार्यवाद

सांख्य दर्शन में सत्कार्यवाद का अर्थ है कि कार्य (प्रभाव) अपने कारण (कारण) में निहित होता है और कार्य के उत्पन्न होने से पहले ही उसका अस्तित्व उसके कारण में रहता है। इसे 'सत्कार्यवाद' या 'अस्तित्व का सिद्धांत' भी कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी भी वस्तु का निर्माण या उत्पत्ति उसके कारण में ही निहित होती है और परिवर्त्तन केवल उस वस्तु के रूप में होता है, जो पहले से ही उसके कारण में मौजूद होती है।

महत्त्व : सत्कार्यवाद का महत्त्व इस बात में है कि यह सृष्टि और परिवर्त्तन को समझने का एक तार्किक और स्पष्ट दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह सिद्धांत यह समझाने में मदद करता है कि कैसे समस्त वस्तुएँ और घटनाएँ अपने मूल कारणों से उत्पन्न होती हैं। यह दृष्टिकोण भारतीय दर्शन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह सिद्धांत अन्य दार्शनिक प्रणालियों, जैसे अद्वैत वेदांत, में भी अपनाया गया है। सत्कार्यवाद के माध्यम से सांख्य दर्शन सृष्टि की निरंतरता और परिर्त्तनशीलता को समझाने का प्रयास करता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com